डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 10-08-2020

विषय- वैदिक साहित्य

ऋग्वेद में धर्म

भारतीय धर्म का प्राचीनतम रूप ऋग्वेद में ही उपलब्ध होता है। इसी को भारतीय धर्म का मूल आधार माना जाता है। ऋग्वेद में, स्थान-स्थान पर ऋचाओं के द्वारा देवताओं का आह्वान किया गया है। स्तोताओं के द्वारा दी गई वस्तुओं को देवताओं तक पहुंचाने का कार्य अग्नि द्वारा किया जाता है। इन सब स्तुतियों तथा आहुतियों के द्वारा जो कर्म किया जाता है उसे यज्ञ कहा गया है। इसी आधार पर कुछ विद्वानों का विचार है कि ऋग्वेद में यज्ञ की प्रधानता है तथा तत्कालीन आर्यों का धर्म यज्ञ करना ही रहा है।

बहुदेववाद

स्तुति प्रधान होने से ऋग्वेद में जिन देवताओं की स्तुति की गई है, उनकी संख्या बहुत होने के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ऋग्वेद का धर्म 'बहुदेववाद' है। ऋग्वेद में 33 देवता है, जिनके तीन वर्ग बनाए गए हैं- १. पृथ्वीस्थानीय, २. अंतरिक्षस्थानीय ३. द्युस्थानीय।

ऋग्वेद के देवताओं में इंद्र, अग्नि, वरुण, सोम, सविता, सूर्य, मित्र, मरुत, विष्णु, पर्जन्य और उषा- ये 11 देवता प्रमुख हैं । ऋग्वेद के सूक्तों में प्रायः इन्हीं देवताओं की स्तुति प्रमुख रूप से की गई है।

एकेश्वरवाद

आचार्य 'यास्क' के अनुसार ऋग्वेद में 'ऐश्वर्यशाली' होने से, एक ही आत्माओं की स्तुति बहुत प्रकार से की जाती है- 'महाभाग्याद देवताया एक एव आत्मा बहुधा स्तूयते।।' (निरुक्त 7/4)

यास्क के इसी मत को आधार बनाकर विद्वानों ने स्वीकार किया है कि ऋग्वेद में अनेक देवताओं की स्तुतियाँ होने के साथ ही साथ 'एकेश्वरवाद' की भावना भी उपलब्ध होती है।

वस्तुतः, ऋग्वेद में एक ही 'परम सत्ता' को अनेक देवताओं के रूप में परिवर्तित हुआ बतलाया गया है। उदाहरणार्थ - ऋग्वेद में अग्नि को ही वरुण, मित्र और इंद्र भी कहा गया है और प्रकट किया गया है कि उसी में सभी देवता केंद्रित है -

"त्वमग्ने वरुणो जायसे यत्त्वं मित्रों भवति यत्समिद्धः।

त्वे विश्वे सहसस्पुत्र देवास्त्वमिन्द्रो दाशुषे मर्त्याय"।।

इसी प्रकार एक ही देव में अनेक देवों की प्रतिष्ठा के प्रतिपादन के लिए ऋग्वेद का यह मंत्र प्राय: उद्धृत् किया जाता है-

"इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निराहुरथो दिव्यस्सुपर्णो गरुत्मान्।

एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहु:।। (ऋग्वेद 1। 164 । 64)

अर्थात्, उस एक ही सत्ता परमेश्वर के होते हुए भी विद्वान उसे अनेक प्रकार से कहते हैं; जैसे- इंद्र, मित्र, वरुण, अग्नि, यम और मातरिश्वा ।

ऐसे ही अनेक उदाहरणों के आधार पर मैक्डानल- जैसे विद्वानों का यह विचार है कि ऋग्वेद में बहुदेववाद प्रवण एकेश्वरवाद का आविर्भाव हो चुका था ।

सर्वदेववाद

'बहुदेववाद' और 'एकेश्वरवाद' के साथ ही साथ ऋग्वेद में सर्वदेववादी या विश्वदेववादी विचारधारा का अस्तित्व भी उपलब्ध होता है । इस विचारधारा का प्रतिनिधित्व वे ऋचाएँ करती है, जिनमें 'एक ही देवता को सभी देवता' कह दिया जाता है । ऐसे स्थलों पर प्रतीत होता है; जैसे वही एक देवता संपूर्ण प्रकृति का प्रतिनिधित्व करता है । उदाहरण के लिए ऋग्वेद के 1/89/10 में अदिति देवता को ही सब कुछ कह दिया गया है-

अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्र:।

विश्वे देवा अदिति: पञ्जजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्"।।

अर्थात अदिति देवता ही द्यौ है, अदिति ही अंतरिक्ष है, अदिति ही माता है, अदिति ही पिता है, अदिति ही पुत्र है । अदिति ही सब देवों के रूप में है । वही उत्पन्न होने वाला है और वही उत्पत्ति स्थान भी है।

सर्वोच्चदेवतावाद

ऋग्वेद में अनेक स्थलों पर, एक ही देवता की स्तुति, उसे सर्वोच्च देवता मानकर की गई है । इस रूप में यदि एक स्थल पर इंद्र को सर्वोच्च देवता कहा गया है,(5।30।5) तो दूसरे स्थल पर अग्नि को और तीसरे स्थल पर वरुण को (5।85।3) । ऐसा ही अन्य अनेक देवताओं के विषय में भी हुआ है। ऐसे स्थलों को देखने से प्रतीत होता है कि जैसे एक देवता को सर्वोच्च देवता कहते हुए स्तोता ऋषि यह भूल जाता है कि दूसरे स्थल पर वह उससे भिन्न ही देवता को सर्वोच्च देवता प्रतिपादित कर चुका है। ऐसे वर्णनों के आधार पर ही मैक्समूलर ने ऋग्वेद में "हैनोथीज्म" के सिद्धांत को स्वीकार किया है।

प्रोफेसर वेबर और कुछ अन्य विद्वान् प्रोफेसर मैक्समूलर के विचार से सहमत नहीं है । उनके विचार में, वास्तविकता यह है कि स्तोता ऋषि, जब किसी देवता की स्तुति करता है तो वह उसके गुणों में इतना खो जाता है, ऐसा तन्मय हो जाता है कि जैसे उसे अपनी भी स्थिति का ज्ञान ही नहीं रहता है। अपनी ही भांति वह अन्य देवताओं के अस्तित्व को भी भूल जाता है। अतः, स्तूयमान देवता ही उसे उस समय सबसे बड़ा, सबसे महान्, सबसे गुणवान देवता अनुभव होता है।

सामान्यतया भी यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि जब हम किसी विशेष आवश्यकतावश, किसी विशेष व्यक्ति के प्रति भावुक होते हैं, तो हमें वही व्यक्ति सर्वगुण संपन्न प्रतीत होता है । यही बात उपर्युक्त विषय में भी समझा जाता है।